श्री रुद्र-चण्डी

बन्धूक-कुसुमाभासां, पञ्च-मुण्डाधि-वासिनीम्।
स्फुरच्चन्द्र-कला-रत्न-मुकुटां मुण्ड-मालिनीम् ।
त्रि-नेत्रां रक्त-वसनां, पीनोन्नत-घट-स्तनीम्।
पुस्तकं चाक्ष - मालां च, वरं चाभयकं क्रमात् ।
दधतीं संस्मरे नित्यमुत्तराम्नाय-मानिताम् ।।

परिचय

रुद्र-यामलोक्त 'श्री रुद्र-चण्डी' के पाठ की बड़ी महिमा है। प्रति-दिन इसके पाँच पाठ करने से निश्चित रूप से रोगों से छुटकारा मिल जाता है। दस पाठ प्रति-दिन करे, तो सभी प्रकार के सङ्कटों से रक्षा होकर पाठ-कर्ता को सब प्रकार का यश और वैभव प्राप्त होता है। यही नहीं, इसके चारों पटलों में जो फल-श्रुतियाँ दी हैं, उनसे इनके पाठ से होनेवाले अनेक लाभों की जानकारी प्राप्त होती है। यही कारण है कि भगवती के उपासकों में इसे बड़ी मान्यता प्राप्त है।

'तान्त्रिक साहित्य' के पृष्ठ ५६० में 'रुद्र-चण्डी या रुद्र-चण्डिका' शीर्षक के अन्तर्गत दो टिप्पणियाँ दी हैं—

(१) रुद्र-यामलान्तर्गत हर-गौरी-सम्वाद-रूप यह चार अध्यायों में है। छात्र पुस्तकालय, कलकत्ता द्वारा यह प्रकाशित किया जा चुका है।

(२) यह रुद्र-यामलान्तर्गत हर-गौरी-सम्वाद-रूप है। इसमें वर्णित विषय हैं—शिव-कार्तिकेय के सम्वाद-रूप में रुद्र चण्डिका कवच, हर-गौरी-सम्वाद-रूप में चण्डी-रहस्य, शिव-दुर्गा के सम्वाद में साधन-रहस्य-कथन, हर और गौरी के सम्वाद में भिन्न-भिन्न वारों में रुद्र-चण्डिका की भैरवी आदि विभिन्न मूर्तियों के पूजन से भिन्न-भिन्न फलों की प्राप्ति आदि।

उक्त टिप्पणियों से वङ्ग-प्रदेश में प्रचलित 'रुद्र-चण्डी-पाठ' की पुष्टि होती है। यहाँ प्रस्तुत 'श्रीरुद्र-चण्डी' का पाठ वङ्ग-प्रदेश में प्रचलित प्रारूप के अनुरूप है। ● ●

अ-नु-क्र-म

१ परिचय	...	४
२ सामान्य पाठ-विधि	...	५
३ श्रीरुद्र-चण्डी कवचम्	...	६
४ श्रीरुद्र-चण्डी त्रैलोक्य-मङ्गल कवचम्	...	१२
५ श्रीरुद्र-चण्डी पूजा-विधि	...	२०
६ श्रीरुद्र-चण्डी-पाठ	...	२२-४१
प्रथमः पटलः (चण्डी-रहस्यम्)	...	२२
मध्यमः पटलः (साधना-रहस्यम्)	...	२६
उत्तमः पटलः (फल-रहस्यम्)	...	३३
तुरीयः पटलः (दुर्गा-प्रीति-वचने माहात्म्यं)	...	४०
क्षमा-प्रार्थना	...	४४
७ परिशिष्ट	...	४५
'श्रीरुद्र-चण्डी' का प्रस्तुत पाठ	...	४५
वङ्ग-प्रदेश में प्रचलित 'श्रीरुद्र-चण्डी'	...	४५
शाप-विमोचन और शापोद्धार-विधि	...	४६
निष्कर्ष—'मूल-पाठ के श्लोकों का पाठ'	...	४७

● ● ●

सामान्य पाठ-विधि

(१) आत्म-शोधन

प्रातः - काल अथवा रात्रि में भोजन से पूर्व निश्चित समय पर, शुद्ध होकर, शुद्ध वस्त्र पहनकर, शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठे ।

पूजा-स्थान में अपने सम्मुख पहले से स्थापित 'पञ्च - पात्र' के जल में, निम्न मन्त्र से 'अंकुश - मुद्रा' द्वारा 'सूर्य - मण्डल' से तीर्थों का आवाहन करे—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे सिन्धु कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

फिर 'पञ्च - पात्र' से बाँएँ हाथ की हथेली में जल लेकर, निम्न - लिखित मन्त्र पढ़ते हुए उस जल को दाएँ हाथ की मध्यमा-अनामिका अँगुलियों से अपने ऊपर छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यतरः शुचिः ।।

(२) आचमन

'आत्म-शोधन' करने के बाद 'पञ्च-पात्र' से पुनः दाएँ हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करे—

१ ॐ आत्म - तत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
२ ॐ विद्या - तत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
३ ॐ शिव - तत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

इसके बाद शिखा पर दाहिना हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़े—

चिद्-रूपिणि महा - माये, दिव्य - तेजः-समन्विते ।
तिष्ठ देवी शिखा - मध्ये, तेजो-वृद्धिं कुरुष्व मे ॥

(३) आसन-शुद्धि

आसन की शुद्धि हेतु निम्न मन्त्र पढ़कर आसन पर गन्ध-पुष्प छोड़े—

ॐ ह्लीं आधार-शक्तये कमलासनाय नमः ।

(४) गुरु-स्मरण

इसके बाद हाथ जोड़कर श्रीगुरु-देव का ध्यान करे—

सहस्र-दल-पङ्कजे सकल-शीत-रश्मि-प्रभम्,
वराभय-कराम्बुजं विमल-गन्ध-पुष्पाम्बरम् ।
प्रसन्न-वदनेक्षणं सकल - देवता - रूपिणम्,
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधान-पूर्वं गुरुम् ॥

फिर 'गुरु-स्तोत्र' का पाठ करे—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः !
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१
अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्-पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२
अज्ञान-तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन-शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३

(५) भगवान् गणेश-पूजन

इसके बाद अपने दाहिने भाग में भगवान् गणेश जी को प्रणाम करे। यथा—

श्रीगणेशाय नमः

ॐ वक्र-तुण्ड ! महा-काय, कोटि-सूर्य-सम-प्रभ !
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्व-कार्येषु सर्वदा ।।
शुक्लाम्बर-धरं देवं, शशि-वर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व - विघ्नोप - शान्तये ।।

(६) श्रीभैरव-प्रार्थना

तब आत्म-रक्षार्थ हाथ जोड़कर श्रीभैरव जी से प्रार्थना करे और उनसे 'पाठ' हेतु आज्ञा ले—

अति-क्रूर ! महा-काय, कल्पान्त-दहनोपम !
भैरवाय नमस्तुभ्यं, अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

(७) भगवती का पूजन

अब भगवती का पूजन करे। पहले अपने सम्मुख स्थापित दीपक को प्रज्वलित कर किसी आधार पर स्थापित करे। फिर दीपक की 'ज्योति' में भगवती का ध्यान करे। दीपक के समीप 'पाद्य' और 'अर्घ्य' के रूप में पञ्च-पात्र से जल चढ़ाए। रक्त-चन्दन - मिश्रित अक्षत और सिन्दूर से तिलक करे। रक्त - पुष्प (गुड़हल, गुलाब, कनेर) आदि चढ़ाए। धूप या अगर - बत्ती

जलाकर सुगन्ध अर्पित करे। 'कपूर' से 'नीराजन' करे। अन्त में 'नैवेद्य' समर्पित कर, जल से आचमन कराए और लौंग, इलायची-युक्त पान का बीड़ा समर्पित करे।

(८) सङ्कल्प

उक्त प्रकार पूजन करने के बाद 'सङ्कल्प' कर पाठ करे। 'सङ्कल्प' इस प्रकार करे—

ॐ तत्-सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वाराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, अमुक-प्रदेशे, कलि-युगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-सम्वत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम शर्मा-वर्मा - दासोऽहं, श्रीरुद्र-चण्डी-प्रीति - कामो, श्रीरुद्र-चण्डी-पूजन-पूर्वकं अमुक-संख्यक-रुद्र-चण्डी-पाठं करिष्ये।

श्रीरुद्र-चण्डी कवचम्

पूर्व-पीठिका

॥ श्रीकार्तिकेय उवाच ॥

कवचं चण्डिका-देव्याः, श्रोतुमिच्छामि, ते शिव ! ।
यदि तेऽस्ति कृपा नाथ ! कथयस्व जगत्-प्रभो ! ॥१

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणु वत्स ! प्रवक्ष्यामि, चण्डिका-कवचं शुभम् ।
भुक्ति - मुक्ति - प्रदातारमायुष्यं सर्व - कामदम् ॥२
दुर्लभं सर्व - देवानां, सर्व - पाप - निवारणम् ।
मन्त्र-सिद्धि-करं पुंसां, ज्ञान-सिद्धि - करं परम् ॥३

विनियोग : श्रीरुद्र-चण्डिका - कवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचण्डिका देवता, चतुर्वर्ग-फल-प्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीभैरव-ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । श्रीचण्डिका-देवतायै नमः हृदि । चतुर्वर्ग-फल-प्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

।। कवच-स्तोत्र ।।

चण्डिका मेऽग्रतः पातु, आग्नेय्यां भव-सुन्दरी ।
याम्यां पातु महा - देवी, नैऋत्यां पातु पार्वती ।।१
वारुणे चण्डिका पातु, चामुण्डा पातु वायवे ।
उत्तरे भैरवी पातु, ईशाने पातु शङ्करी ।।२
पूर्वे पातु शिवा देवी, ऊर्ध्वे पातु महेश्वरी ।
अधः पातु सदाऽनन्ता, मूलाधार - निवासिनी ।।३
मूर्ध्नि पातु महा - देवी, ललाटे च महेश्वरी ।
कण्ठे कोटीश्वरी पातु, हृदये नल - कूबरी ।।४
नाभौ कटि - प्रदेशे च, पायाल्लम्बोदरी सदा ।
ऊर्वोर्जान्वोः सदा पायात्, त्वचं मे मद-लालसा ।।५
ऊर्ध्वे पार्श्वे सदा पातु, भवानी भक्त-वत्सला ।
पादयोः पातु मामीशा, सर्वाङ्गे विजया सदा ।।६
रक्त-मांसे महा-माया, त्वचि मां पातु लालसा ।
शुक्र-मज्जास्थि-सङ्घेषु, गुह्यं मे भुवनेश्वरी ।।७
ऊर्ध्व-केशी सदा पायात्, नाड़ी सर्वाङ्ग-सन्धिषु ।
ॐ ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डे, स्वाहा-मन्त्र-स्वरूपिणी ।।८
आत्मानं मे सदा पायात्, सिद्ध-विद्या दशाक्षरी ।
इत्येतत् कवचं देव्याश्चण्डिकायाः शुभावहम् ।।९

॥ फल-श्रुति ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन, कवचं सर्व - सिद्धिदम् ।
सर्व-रक्षा-करं धन्यं, न देयं यस्य कस्यचित् ॥१०

अज्ञात्वा कवचं देव्या, यः पठेत् स्तवमुत्तमम् ।
न तस्य जायते सिद्धिर्बहुधा पठनेन च ॥११

धृत्वैतत् कवचं देव्या, दिव्य - देह-धरो भवेत् ।
अधिकारी भवेदेतच्चण्डी - पाठेन साधकः ॥१२

॥ श्रीरुद्रयामल-तन्त्रे शिव-कार्तिकेय-सम्वादे रुद्र-चण्डी-
कवचं सम्पूर्णं शिवं भूयात् ॥

रुद्र-चण्डी त्रैलोक्य-मंगल कवचम्

पूर्व-पीठिका

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

देव-देव ! महा - देव ! दयालो ! दीन-वत्सल ! ।
केन सिद्धि ददात्याशु, चण्डी त्रैलोक्य-दुर्लभा ॥१

॥ श्रीमहा-देव उवाच ॥

रुद्रेणाराधिता चण्डी, महा - सिद्धिर्भवेत् तदा ।
रुद्र-रूपा रुद्र-भावा, रुद्र-भूषा सदा स्थिता ॥२
रुद्र-ध्येया रुद्र - गेहा, रुद्राणी रुद्र-वल्लभा ।
सर्वदा वरदा देवी, ब्रह्म - ज्ञान - प्रदायिनी ॥३
सर्व-पाप-हरा देवी, सर्व - रोग - क्षयङ्करी ।
सर्वारिष्ट - गतैर्दात्री, सर्व - ग्रह - निवारिणी ॥४
शिवं देहि शुभं देहि, सुखं देहि सदा प्रिये !
तुष्टि पुष्टि जयारोग्यं, मङ्गलानां च मङ्गलम् ॥५
अकाल - मरणं वापि, काले मृत्युर्यदा भवेत् ।
चण्डी-स्मरण-मात्रेण, मृत्योर्मृत्यु - करं परम् ॥६
ज्ञात्वा देव-गणाः सर्वे, चण्डश्चभूद् रुद्र-गेहिनी ।
रुद्र-चण्डी तदा ख्याता, त्रैलोक्यं परमेश्वरी ॥७

रुद्रोऽभवन्महा - रुद्रश्चण्डी - पाठ - प्रसादतः ।
तदा शापः प्रदातव्यः, स्वीय-सिद्धिर्यदा शिवे ! ॥८
कृष्णेनाराधिता चण्डी, कृष्ण-चण्डी न सिद्धिदा ।
कृष्ण-नाम-धरा देवी, सर्व - तन्त्रेषु गोपिता ॥ ६
कृष्ण-चण्डी महा-देवी, प्राणान्ते न प्रकाशिता ।
ज्ञात्वा चण्डीं जगत् सर्वं, कृष्ण-शापोऽभवत् तदा ॥१०
तदन्ते चण्डिकां ज्ञात्वा, कृष्ण-शापोऽभवन्मुदा ।
स्वीय-भावे तदा देवी, अभिशापं करोति हि ॥
तेन ते स्वीय - पापेन, न सिद्धयन्ति कदाचन ॥११

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

देव-देव ! दीन-नाथ, दीन-बन्धो ! दया-निधे ! ।
इदानीं वद मे नाथ ! चण्डी-सिद्धि-करं परम् ॥१२
विना ध्यानं विना पूजां, विना जप-परायणम् ।
विना होमं विना मन्त्रं, विना साधन-संज्ञकम् ॥१३
अनायासेन सिद्धयन्ति, केनोपायेन तद् वद ।

॥ श्रीमहा-देव उवाच ॥

शृणु पार्वति, सुभगे ! चण्डी-सिद्धि-करं परम् ।
रुद्र - ध्येया रुद्र - चण्डी, प्रसन्ना सर्वदा सती ॥१४
तस्याहं कवचं देवि ! कथयामि शुचि-स्मिते ! ।
त्रैलोक्ये सर्व - देवानां, साधनेनैव यत् फलम् ॥१५

तत् फलं लभते सद्यः, कवचाध्याय - मात्रतः ।
शतमष्टौ पठेद् यस्तु, सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत् ॥१६
शतावृत्ति पठेद् यो हि, सप्त-द्वीपेश्वरो भवेत् ।
पञ्चाशत्-पाठ-मात्रेण, पञ्चाशद् - वर्ण - सिद्धये ॥१७
अष्टा-विंशति-पाठेन, अष्ट-सिद्धिः करे स्थिता ।
एकादश पठेद् यस्तु, रुद्रस्तस्य प्रसन्न-धीः ॥१८
दश-विद्याः प्रसिद्धयन्ति, यः पठेद् दशधा शिवे ! ।
नवावृत्ति पठेद् यो हि, ग्रह-देव-प्रसन्न-धीः ॥१९
अष्टावृत्ति पठेद् यस्तु, अष्ट-पाशैर्विमुच्यते ।
सप्तधा पाठ - मात्रेण, चिरायुर्भवेत् ध्रुवम् ॥२०
पठेत् षष्ठं कर्म-भेदे, षट्-कर्म-सिद्धये ध्रुवम् ।
पञ्चमं प्रपठेद् यस्तु, पञ्चात्मा च प्रसन्न-धीः ॥२१
चतुर्थं प्रपठेद् यस्तु, चतुर्वेद - विदां वरः ।
त्रिधा पाठे महेशानि ! सर्व-शान्तिर्भविष्यति ॥२२
पाठ-द्वयं कृतं यद्धि, सर्व - काम्यं प्रसाधयेत् ।
एकधा पाठ - मात्रेण, चण्डी-सिद्धिर्भविष्यति ॥२३
अतः परमहं वक्ष्ये, कवचं च परात्परम् ।
रक्षा-करं महा-मन्त्रं, त्रैलोक्य - मङ्गलाभिधम् ॥२४
प्रणवो वाग्भवो माया, ततः सद्यः सनातनी ।
स्थिरा माया ततः कामो, लज्जा-युग्मं ततः परम् ॥२५

एष नवाक्षरो मन्त्रः, सर्वाशा - परि - पूरकः ।
अग्नि-स्तम्भं जल-स्तम्भं, वायु-स्तम्भं ततः परम् ।।२६
बहु किं कथ्यते देवि ! त्रैलोक्य-स्तम्भनं भवेत् ।
कर्षयेदखिलं देवि ! शोषयेदखिलं जगत् ।।२७
मोहयेदखिलान् लोकान्, मारयेत् सकलं जगत् ।
वशयेत् सर्व - देवादीन्, ऋतु-भेदे महेश्वरि ! ।।२८
सर्व-रक्षा-करो मन्त्रः, साक्षाद् ब्रह्म न संशयः ।
(नवाक्षर मन्त्र : ॐ ऐं ह्रीं ॐ क्रीं ह्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं)

॥ कवच-स्तोत्र ॥

शिखायां प्रणवः पातु, शिरसि वाग्भवः प्रिये ! ।
भ्रू-मध्ये रक्षते माया, हृदयं कालिकाऽवतु ।।१
नाभिं पातु स्थिरा माया, तदधः काम रक्षतु ।
लिङ्ग-मूलं पातु लज्जा, यजुर्गुह्ये सदाऽवतु ।।२
कटिं पृष्ठं कूर्परं च, स्कन्धं कर्ण-द्वयं तथा ।
प्रणवो रक्षते देवि ! मातृ - भावेन सर्वदा ।।३
कण्ठं गलं च चिबुकं, ओष्ठ-द्वयं ततः परम् ।
दन्तं जिह्वां तथा रन्ध्रं, तदन्ते मुख-मण्डलम् ।।४
वाग्भवो रक्षते देवि ! पितृ - भावेन सर्वदा ।
नासिकां हनु-युग्मं च, चाक्षुषी भ्रू-युगं तथा ।।५

ललाटं च कपालं च, चन्द्र-सूर्याऽग्नि-मण्डलम् ।
सर्वदा रक्षते माया, शक्ति - रूपे महेश्वरि ! ।।६
बाहु-द्वयं ततः सर्वं, पञ्जरं हृदि - मण्डलम् ।
रक्षते कालिका - बीजं, कन्या-रूपेण सर्वदा ।।७
उदरं मूल-देशं च, चण्डिके ! त्वं सदाऽवतु ।
रक्तं मांसं तथा मज्जा, शुक्राणि मेद एव च ।।८
रक्षेल्लज्जा शक्ति-रूपे, सगुणा परमा कला ।
नख-केशानि सर्वाणि, यजुः पातु सदा प्रिये ! ।।९
सर्वाङ्गं रक्षते चण्डी, सर्व-मन्त्रं स-कीलकम् ।
आत्मा परात्मा जीवात्मा, चण्डिका पातु सर्वदा ।।१०
साधने चण्डिका पातु, सज्-ज्ञानं चण्डिकाऽवतु ।
सत्सङ्गं चण्डिका पातु, सद्-योगं चण्डिकाऽवतु ।।११
सत्कथां चण्डिका रक्षेत्, सच्चिन्तां चण्डिकाऽवतु ।
पूर्वस्यां चण्डिका पातु, आग्नेय्यां चण्डिकाऽवतु ।।१२
दक्षिणस्यां तथा चण्डी, सर्वदा परि - रक्षतु ।
नैऋत्यां चण्डिका रक्षेत्, पश्चिमे चण्डिकाऽवतु ।।१३
वायव्यां चण्डिका पातु, उत्तरे चण्डिकाऽवतु ।
ऐशान्यां चण्डिका पातु, ऊर्ध्वाधश्चण्डिका तथा ।।१४
चण्डिका रक्षते कन्यां, सुतां स्त्रीं चण्डिकाऽवतु ।
भ्रातरं भगिनीं सर्वं, चण्डिका रक्षते सदा ।।१५

बन्धु-वर्ग-कुटुम्बानि, दासी - दासं ततः परम् ।
रक्षते चण्डिका देवी, मातृ - भावान्महेश्वरी ॥१६
गज-वाजि-गवान् सर्वान्, जन्तूनां सर्व-पर्वसु ।
रक्षते चण्डिका देवी, स्वीय-भावेन शाम्भवी ॥१७
वास्तु-वृक्षादिकं सर्वं, चण्डिका रक्षते सदा ।
सैन्यं स्व-सैन्य-वर्गाणां, चण्डिका परि - रक्षतु ॥१८
श्मशाने प्रान्तरेऽरण्ये, चण्डिका पातु सर्वदा ।
राज - द्वारे रणे घोरे, पर्वते वा जले स्थले ॥१९
अग्नि - वज्रादि-दुर्योगे, विवादे शत्रु-सङ्कटे ।
चण्डिका पातु सर्वत्र, यथा धेनुः सुतं प्रति ॥२०
इति ते कथितं कान्ते ! त्रैलोक्य-मङ्गलाभिधम् ।
त्रैलोक्य - मङ्गलं नाम, कवचं परि - कथ्यते ॥२१

॥ फल-श्रुति ॥

इदं कवचमज्ञात्वा, रुद्र - चण्डीं पठेद् यदि ।
सिद्धिर्न जायते तस्य, कल्प - कोटि - शतैरपि ॥२२
इदं कवचमज्ञात्वा, चण्डी - पाठं करोति यः ।
विपरीतं भवेत् सर्वं, विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥२३
तदनन्तं भवेत् सर्वं, कवचाध्याय - मात्रतः ।
धारणे कवचं देवी, फल - संख्या - प्रपूरकम् ॥२४

तत्रैव कवचं देवि ! सर्वशा - परि - पूरकम् ।
पञ्च - वक्त्रेण कथितं, किं मया कथ्यतेऽधुना ।।२५
भूर्जे गन्धाष्टकेनैव, लिखेत् तु कवचं शुभम् ।
स-मन्त्रं कवचं देवि ! स्व - मन्त्र - पुटितं ततः ।।२६
गोत्रं नाम ततः कामं, पुनर्मन्त्रं लिखेत् प्रिये ! ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां, पक्षयोरुभयोरपि ।।२७
प्राण - प्रतिष्ठा - मन्त्रेण, प्रतिष्ठां कुरुते ततः ।
पूजयेद् विधि - युक्तेन, पञ्चाङ्गं तदनन्तरम् ।।२८
एवं ते धारयेद् यस्तु, स रुद्रो नात्र संशयः ।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ,'हृन्नाभि - कटि - देशतः ।।२९
योषिद् वाम-भुजे धृत्वा, साक्षात् काली न संशयः ।
धनं पुत्रं जयारोग्यं, यद् यन्मनसि कामदम् ।।३०
तत्तत् प्राप्नोति देवेशि ! निश्चितं मम भाषितम् ।
न सन्देहो न सन्देहो, न सन्देहः कदाचन ।।३१
देयं शिष्टाय शान्ताय, गुरु - भक्ति - रताय च ।
शक्ति-ध्येयाः शक्त-रताः, शक्ति-प्राणाः सदाशयाः ।।३२
एवं तल्लक्षणैर्युक्तं, कवचं दीयते क्वचित् ।
नित्यं पूजा प्रकर्तव्या, कवचं परमं शिवे ! ।।३३
अशक्तौ परमेशानि ! पुष्प - धूपं प्रदापयेत् ।
तस्य देहे तस्य गेहे, चण्डिका त्वचला भवेत् ।।३४

खले दुष्टे शठे मूर्खे, दाम्भिके निन्दके तथा ।
शक्ति-निन्दां शक्ति-हिंसां, यः करोति सः पामरः ॥३५

एतेषां परमेशानि ! सुकृतिर्न कदाचन ।
न दद्यात् कवचं देवि ! यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥३६
दत्ते च सिद्धि-हानिः स्याद्, दत्ते च शिवहा भवेत् ॥३७

॥ श्रीरुद्र-यामल-तन्त्रे श्रीपार्वती-रहस्ये त्रैलोक्य-मङ्गलं नाम रुद्र-चण्डी-कवचं सम्पूर्णं शुभं भूयात् ॥

श्रीरुद्र-चण्डी पूजा-विधि

सङ्कल्प : ॐ विष्णुः तत्-सदद्य…अमुक-सम्वत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अक-गोत्रः, अमुक-नामः, श्रीरुद्र-चण्डी-प्रीति-कामः रुद्र-यामलोक्त-श्रीरुद्र - चण्डी - पूजन - पूर्वक-मियत्-संख्यक-रुद्र-चण्डी-पाठ-कर्माऽहं करिष्ये ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीरुद्र-चण्डी-मन्त्रस्य श्रीरुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरुद्र-चण्डी देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीरुद्र - चण्डी - देवता - प्रीत्यर्थं श्रीरुद्र - चण्डी - पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीरुद्र - ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । श्रीरुद्र-चण्डी-देवतायै नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः नाभौ । क्लीं कीलकाय नमः पादयोः । श्रीरुद्र-चण्डी-प्रीत्यर्थं श्रीरुद्र-चण्डी-पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

षडङ्ग-न्यास	**कर-न्यास**	**अङ्ग-न्यास**
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ह्रः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

माया-बीज 'ह्रीं' या प्रणव 'ॐ' से प्राणायाम कर ध्यान करे--

ध्यान : ॐ रक्त-वर्णां महा-देवीं, लसच्चन्द्र-विभूषिताम्,
पट्ट-वस्त्र-परीधानां, सव लङ्कार - भूषिताम् ।
वराभय - करां देवी, मुण्ड-माला-विभूषिताम,
कोटि-चन्द्र-समासीनां, वदनैः शोभितां पराम् ।
कराल-वदनां देवीं, किञ्चिज्जिह्वां च लोलिताम,
स्वर्ण-वर्ण-महादेव - हृदयोपरि - संस्थिताम् ।
अक्ष-माला - धरां देवीं, जप-कर्म-समाहिताम,
वाञ्छितार्थ-प्रदायिनीं, रुद्र - चण्डीमहं भजे ॥

मानस-पूजन : ॐ लं पृथ्वी - तत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः । ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं .समर्पयामि नमः । ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः । ॐ रं अग्नि - तत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः । ॐ वं जल - तत्त्वात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः । ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः ।

रुद्र-चण्डी गायत्री : ॐ ह्रीं रुद्र-चण्डिकायै विद्महे पूर्ण-फल-प्रदायिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

मूल-मन्त्र : ॐ ऐं ह्रीं ॐ क्रीं ह्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं (६)

यथा-शक्ति उक्त दोनों मन्त्रों का जप कर प्रार्थना करे—

ॐ रुद्र-चण्डि ! नमस्तुभ्यं, चण्डि वैरि-विनाशिनि !
सर्व - पाप - हरे देवि ! सर्वदा वरदा भव ॥

विशेष : श्रीरुद्र-चण्डी का दशाक्षर-मन्त्र है—'ॐ ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डे स्वाहा ।' इस मन्त्र के ऋषि भैरव, छन्द अनुष्टुप्, देवता वही, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'स्वाहा' और कीलक 'ऐं' है। शेष नवार्ण - मन्त्र - वत्, केवल ध्यान भिन्न है, यथा—'बन्धूक-कसुमाभासां पञ्च-मुण्डादि-वासिनीम्' इत्यादि ।

श्रीरुद्र-चण्डी-पाठ

प्रथमः पटलः---चण्डी-रहस्यम्

पूर्व-पीठिका

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

भगवन् भूत - भव्येश ! त्रैलोक्याधिपते हर ! ।
यदुपाख्यानमाश्चर्यं, सौरथेयं वदस्व मे ॥१

॥ रुद्र उवाच ॥

चण्डिकेयं चतुर्वर्ग - फलदा साधकेश्वरी ।
कोटि - जन्मार्जितात् पुण्यादत्र श्रद्धा विधीयते ॥२

मूल-पाठ प्रारम्भ

ॐ नमो गणेशाय । ॐ नमो वाण्यै । ॐ नमो ब्रह्मणे । ॐ नमो विष्णवे । ॐ नमः शिवाय । ॐ नमश्चण्डिकायै ।

विनियोग : श्रीरुद्र-चण्डिकायाः ब्रह्मादयः ऋषयः । अनुष्टुप् छन्दः । चण्डिका देवता । चतुर्वर्ग-साधने रुद्र-चण्डिका-पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि - न्यास : ब्रह्मादिभ्यः ऋषिभ्यो नमः शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। चण्डिका-देवतायै

नमः हृदि । चतुर्वर्ग-साधने रुद्र-चण्डिका-पाठे विनियो-
गाय नमः सर्वाङ्गे ।

॥ ध्यान ॥

ॐ रक्त - वर्णां महा-देवीं, लसच्चन्द्र-विभूषिताम्,
पट्ट-वस्त्र - परीधानां, सर्वालङ्कार - भूषिताम् ।
वराभय - करां देवीं, मुण्ड - माला - विभूषिताम्,
कोटि-चन्द्र-समासीनां, वदनैः शोभितां पराम् ।
कराल-वदनां देवीं, किञ्चिज्जिह्वां च लोलिताम्,
स्वर्ण - वर्ण - महादेव - हृदयोपरि - संस्थिताम् ।
अक्ष-माला-धरां देवीं, जप - कर्म - समाहिताम्,
वाञ्छितार्थ - प्रदायिनीं, रुद्र - चण्डीमहं भजे ॥

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः ।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः ।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः ।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः ।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः ।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मक ताम्बूलं समर्पयामि नमः ।

॥ श्रीरुद्र-चण्डी पाठ ॥

ॐ सावर्णिरिति विख्यातो, मनुरासीन्महेश्वरि ! ।
वक्ष्ये त्वयि तद्वृत्तान्त, शृणुष्व त्वं समाहिता ॥1

पूर्वं यत् सूचितं कान्ते ! न श्रुतं क्वापि तद् यथा ।
श्रूयतां श्रूयतां रम्ये ! देवि ! प्रौढ़े ! वराङ्गने ! ।।२
इत्युक्त्वा सव्य-हस्तेन, चिबुकं गृह्य चुम्बितम् ।
वक्त्रारविन्दं सुन्दर्याः, कृत्वा चोवाच शङ्करः ।।३
अधुनैवागतस्तत्र, गणेशस्तन्त्र - विद् गुरुः ।
प्रणम्य साम्बिकं रुद्रं, उषितं भैरवैः सह ।।४
नायिका योगिनीभिः सा, सावधानेन शङ्करी ।
कैलासे योग - संस्थाने, महद् - गुह्यानि श्रूयते ।।५
महा - मायाऽनुभावेन, योऽष्टमः सूर्य-सम्भवः ।
चैत्रान्मन्वधिपो राजा, स नाम्ना सुरथः सुधीः ।।६
पूर्वं स्वारोचिषे जातः, सकलेऽवनि - मण्डले ।
जितः काले नृपैरन्यैः, सोऽभूत् कोलाख्यकैर्नृपः ।।७
तथाऽमात्यैरेव स तैर्वनं घातो नृपाग्रणीः ।
विवेकेनैव यत्रास्ते, वर्यो मेधा महा - मुनिः ।।८
तत्रातिष्ठत् कियत् - कालं, विचरन् स तदाश्रमे ।
दृष्ट-वान् जनमेकं च, वैश्यं विरहिणं वने ।।९
तमपृच्छन्महा-राज ! कस्मान् म्लानो भवांस्ततः ।
राज्ञा पृष्टः कृतार्थः सन्, दुःखितोऽहं भवान् यथा ।।१०
विवेकिनौ तौ मिलितौ, प्राप्तावेवान्तिकं मुनेः ।
पृष्टो नृपेण विप्रेन्द्रोऽप्ययं पुत्रैर्निराकृतः ।।११

अहं ममत्वमापन्नो, राज्ये राज्याङ्गकेष्वपि ।
तथाऽप्येवावयोः कस्माद्, हार्दी भवति तेषु च ।।१२
मेधसोवतं बल-वती, महा - माया गदा - भृतः ।
तया सम्मोह्यते विश्वं, सृजत्यवति हन्ति च ।।१३
चेतः सु-ज्ञानिनां देवी, नित्या भगवती हि सा ।
वरदा मुक्तये लोके, योग - निद्राऽभि - धीयते ।।१४
विश्वाधारा जगन्मूर्तिर्दैत्यारेरीश्वरी च सा ।
उत्पन्ना परमोत्पन्ना, विष्णु - निद्रा मृषार्दिनी ।।१५
नन्दजा विन्ध्य-संस्थाना, हैमी हरि-हर-प्रिया ।
स्तुतिः प्रीतिः सुर-प्रीता, कृतिः प्रीतिः पुरावहा ।।१६
मुनेस्तस्योपदेशेन, मृण्मयीं मधु - मासतः ।
मूर्ति निर्माय तौ पूजां, चक्रतुर्वत्सर - त्रयम् ।।१७
तत आगत्य सा देवी, ताभ्यामिष्टं वरं ददौ ।
दुर्गा - वरं समालभ्य, सूर्य - वीर्य - समुद्भवः ।।१८
मन्वन्तराधिपः श्रीमान्, सुरथः सम्भविष्यति ।
समाधिर्ज्ञानमासाद्य, मुक्तोऽभूत् तत् - प्रसादतः ।।१९
योग - निद्रा - समापन्नो, यदा विष्णुर्जगद्-गुरुः ।
तदा द्वावसुरौ घोरौ, मधु - कैटभ - संज्ञकौ ।।२०
हरि - कर्ण - मलोद्भूतौ, ब्रह्माणं हन्तुमुद्यतौ ।
भीतो ब्रह्मा भक्ति - युतस्तामसीं शरणं गतः ।।२१

भयाद् वाग्भिः स्तुतो ब्रह्मा, तामसीं स्तौति तादृशीं ।
अतुलां योग-निद्राख्यां, भक्ताभीष्टां सुरात्मिकाम् ।।२२
स्वाहा-स्वधा-वषड्-रूपां, शुभां पीयूष-वादिनीम् ।
अक्षरां बीज-रूपां च, पालयित्रीं विनाशिनीम् ।।२३
त्रिधा-मात्रात्मिकास्थां च, अनुच्चार्यां महेश्वरीम् ।
माहेश्वरीं महा - मायां, मातरं सर्व - मातरम् ।।२४
अर्द्ध-मात्रां च सावित्रीं, महा-विद्यां विनोदिनीम् ।
इत्थं स्तुता त्यक्त - वती, षडङ्गं मधु - वैरिणः ।।२५
स चोतस्थो जगद् - बन्धुर्युयुधे बाहु - युद्धतः ।
वर्ष - पञ्च - सहस्राणि,' सतस्तौ दानवौ मृतौ ।।२६
ततो देवासुरं युद्धं, शत - वर्षमभूत् पुरा ।
पराजितोऽभूद् देवेन्द्रः, इन्द्रोऽभून्महिषासुरः ।।२७
ततः सा तामसी देवी, देव - तेजः - समुद्भवा ।
जघान सप्त - सेनान्यश्चिक्षुराख्य - मुखांस्तथा ।।२८
उग्र - वीर्यादिकानां च, सेनाश्च चतुरङ्गिणीः ।
खुर - क्षेपादिकोन्मत्तं, मायिकं महिषं रणे ।।२९
माहिषं सैंहिकं रूपं, पौरुषं हास्तिकं तदा ।
द्वै-रूप्यं च यथा कृत्वा, जघान वर - वर्णिनी ।।३०
हिमालये स्थितैर्देवैः, स्तुता दैत्य - निपीडितैः ।
कालिका शिव-दूती चामुण्डा-मूर्ति-धरा परा ।।३१

सुग्रीवस्य वचः श्रुत्वा, धूम्र - नेत्रं निपातितम् ।
चण्डं मुण्डं रक्त-बीजं, रक्त-विन्दु - समुद्भवम् ॥३२

कम्ब्वन्वयं कोटि-वीर्यं, कालकेयं च कालकम् ।
धौम्रं मौर्यं दौर्हृदं च, षडशीति - सहस्रकम् ॥३३

कालकेयादि - सैन्यं च, सर्वं नायक - भूषितम् ।
पुनः शुम्भं निशुम्भं च, दैत्य - राजं जघान सा ॥३४

देवानां स्थानमादत्तं, शेषं पाताल - संस्थितम् ।
कृत्वा रमति कल्याणी, रण-स्थल्यां रण-प्रिया ॥३५

तदा वृहस्पति - मुखा, महर्षि - सुर - सिद्धकाः ।
स्तोत्रैर्नाना - विधैरन्यैः, स्तुतिं चक्रुरनुत्तमाम् ॥३६

कात्यायनी मातृकाख्या, अपां रूपा विशोकिनी ।
वैष्णवी नारसिंही च, वाराही च महेश्वरी ॥३७

कौमारी च तथेन्द्राणी, ब्रह्माणी चाग्नि-रूपिणी ।
महा-काली महा-लक्ष्मीर्महा - कल्पा सरस्वती ॥३८

एक-वीरा भ्रामरी च, तथैवाष्ट - भुजा शिवा ।
दश-हस्ता सहस्र-भुजा सर्व - शक्ति - रूपिणी ॥३९

॥ फल-श्रुति ॥

इत्थं चण्डीं पठेद् यस्तु, द्विजो वा प्रति-वासरम् ।
कुजे वा शनिवारे वा, पठन् सर्व - फलं लभेत् ॥४०

एकावृत्त्या भवेत् सौख्यं, त्रिरावृत्त्योपसर्गतः ।
स्यान्मुक्तो ग्रह - दोषाच्च, पञ्चावृत्तं पठेद् यदि ।।४१
सप्तावृत्तं महा - भीतौ, नवावृत्तं च शान्तितः ।
वाजपेय-फलं चापि, रुद्रावृत्त्याऽश्व - मेधिकम् ।।४२
गोमेध - नर - मेधस्य, शत्रु - नाशं तथाऽर्द्धतः ।
मन्वावृत्त्या सुखी भूयात्, कलावृत्त्या भवेद् धनी ।।४३
यथा - कामं सप्त - दशे, तथा चाष्टादशे शुभम् ।
नारी-प्रियतमो याति, विंशावृत्त्या ऋणं हरेत् ।।४४
पञ्च-विंशाद् भवेद् स्वर्गी, शतावृत्त्या तव प्रियः ।
अष्टोत्तर-शतावृत्त्या, राज - सूय - फलं लभेत् ।।४५
अग्नि-होत्री नित्य - पाठात्, त्यजेद् देहं हरेर्द्रवे ।
सहस्रावृत्ति-पाठस्य, फलं किं स्याद् वरानने ! ।।४६
तद् वक्तुं न हि शक्नोमि, सत्यं वर्षायुतैरपि ।
इत्युक्तं मम सर्वेशि ! अरि-सङ्घ-विघातकम् ।।४७
सर्वेषां चैव वर्णानां, विद्यानां च यशस्विनी ।
इयं योनिः समाख्याता, सर्व - तन्त्रेषु सर्वदा ।।४८

।। श्रीमदागम-सन्दर्भे श्रीमद्-रुद्रयामले रुद्र-चण्डिकायां हर-गौरी-सम्वादे चण्डी - रहस्यं नाम प्रथमः पटलः ।।

मध्यमः पटलः

(साधना-रहस्यम्)

॥ पूर्व-पीठिका—श्रीरुद्र उवाच ॥

रहस्यं चण्डिका - देव्या, विदितं भुवन - त्रये ।
काय-वाक्-चित्त-शुद्धः सन्, पठन् प्रियतमो भवेत् ॥१
रुद्र-चण्डी महा - पुण्या, त्रिगुणाख्या विधातृका ।
तारिणी तरुणी तन्वी, तन्त्रिका विश्व-रूपिका ॥२
विरोधिनी विप्र-चित्ता, वाणी - वर्णावबोधिका ।
वासिनी वनिता विद्या, वरारोहा विमोहिनी ॥३
बगला शङ्करी शान्तिः, शुभा क्षेमङ्करी दया ।
महात्मिका मनो-रूपा, सीता माया मलापहा ॥४
माता भगवती शक्तिः, शिवा साध्या सुरेश्वरी ।
सर्वाणी सिंह-संवाहा, शम्भु-वक्षःस्थल-स्थिता ॥५
एकावृत्तिं संशृणोति, नन्दिकेशो महा - मनाः ।
विनायकस्त्रिरावृत्तिं, ग्रहाः पञ्चाथ भैरवाः ॥६
शृण्वन्ति कामदाः सप्त, मानवो नवधाऽऽवृत्तिम् ।
अर्कावृत्तिं च देवेन्द्रो, देवैः सिद्धादिभिस्तथा ॥७
रुद्रावृत्तिं रुद्र - गणः, सादराः सुमनास्तथा ।
नवावृत्तिं यक्ष - राजः, कलावृत्तिं तथा शची ॥८

समुद्रजा सप्तदश, ऋषि - दारा दशाष्टधा ।
विंशावृत्ति च शमनः, पञ्च-विंशं गदा - धरः ॥९
शतावृत्ति योगिनीनां, ब्रह्मा साष्ट - शतं सुरैः ।
सहस्राद्धं नायिकानां, तदूर्ध्वं शक्तिभिः सह ॥१०
शतावृत्ति नवावृत्तिमष्टावृत्ति महेश्वरी ।
श्रुत्वाऽभीष्टं फलं दद्याद्, अन्यथा सुत-घातिनी ॥११

॥ मूल-पाठ ॥

महा-माया-वरं लब्ध्वा, सावर्णिरष्टमो मनुः ।
अभवत् परमेशानि ! दुर्गा - पाठमिदं महत् ॥१
हरि-कर्ण-मलोद्भूतौ, महा - वीर्य - मदोद्धतौ ।
उभयासुर - संहन्त्री, हरिणा परमेश्वरी ॥२
जघान महिषं संख्ये, पञ्च-विंशति - कोटिभिः ।
सेनाभिः परमेशानि ! त्वां नतोऽस्मि नतोऽस्मि तां ॥३
नियुतैरष्टभिः संख्ये, निशुम्भ-शुम्भ-नाशिनी ।
विन्दूद्भवैर्द्वादशभिस्तथाऽक्षौहिणीभिः शुभे ! ॥४
जघान दितिजं संख्ये, शत-सप्तति - कोटिभिः ।
विष्णु-प्रीता व्यास-रता, गण-माता सरस्वती ॥५
पर्व-स्तुताऽष्टमी-रता, षट् - प्रणाम - स्वरूपिणी ।
नारायण-श्लोक-रूपा, चण्डिकाऽऽह्लाद-रूपिणी ॥६
तत्-कुक्षि-प्रभवा देवी, तद्-गुह्य-परिवादिनी ।
तद् - विकारा तदाधारा, शत - सप्त- परायणा ॥७

मुक्ति - रूपा नियोगाख्या, न्यास-रूपाधि-देवता ।
त्रिधा-मूर्तिः शक्ति-सारा, त्रि-चरितार्गलाऽधुना ॥८
कीलका सूक्त - सम्भावा, कवचाह्लादिनी महा ।
उल्लासिनी षड्-गुणाख्या, त्रि-दशाध्याय-रूपिणी ॥९
माहात्म्य-वाचिनी बाला, सुरथ-राज्य-साधिका ।
पुनश्चासौ शारदीये, शारदीयामिषे रमे ॥१०
अरण्ये रघुनाथोऽपि, महा - पूजां करिष्यति ।
कात्यायनि ! बुद्धि-रूपे ! अपवर्ग-प्रदायिनि ! ॥११
निमेषादि - स्वरूपेण, नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।
शरण्ये ! नायिके ! घोरे ! शक्ति-सिंह-समन्विते !॥१२
रुद्रे ! रौरव-रुद्धे ! च, नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।
स्त्री-समस्ते ! सर्व-विद्ये ! सर्व-भूताशय-स्थिते !॥१३
कात्यायनि ! विप्र-तापे ! नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।
चिक्षुरश्चामरोदग्र - विडालोग्रास्य - वाष्कलाः ॥१४
तथोग्र-वीर्य - ताम्राख्यासुर - दुर्द्धर - दुर्मुखाः ।
महा-हनूद्धताद्याश्च, नाशिताश्चण्डिके ! त्वया ॥१५
तस्मात् सर्वाणि सर्वेशि ! नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।
जयन्ती मङ्गला काली, भद्र - काली कपालिनी ॥१६
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।
शिवे ! दुर्गे ! महा-माये ! भीमे ! भय-विनाशिनि !॥१७

चण्डिके ! चण्ड-दैत्यघ्नि ! सुराध्यक्षे ! परे ! शिवे !
नारायणि ! नारसिंहि ! वाराहि ! वरदे वरे ! ।।१८
शरण्ये ! सर्वदे ! देवि ! दुर्गे ! दुर्ग-विनाशिनि !
भवानि ! परमाराध्ये ! कौमारि ! निगमावहे ! ।।१९
नित्य-स्मेरे ! निधे ! दौर्गे ! सर्वाशुभ-विनाशिनि !
कृतार्थोऽस्मि कृतार्थोऽस्मि, कृतार्थोऽस्मीति भाग्यवान् ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, प्रसीद परमेश्वरि ! ।।२०

।। फल-श्रुति ।।

भवानी - सन्निधौ यस्तु, चण्डीमेतामुदीरयेत् ।
दरिद्रोऽपि धनी भूत्वा, शिव-लोकं व्रजेत् किल ।।१
शनि-भौम-दिने देवि ! यदि चेन्दु - क्षयो भवेत् ।
तदा देव - मुनीन्द्राणां, शरण्यः प्रपठन् भवेत् ।।२
भौम-वारे कृष्ण-पक्षे, यदि स्यादष्टमो - तिथिः ।
बिल्व - पत्र - सहस्रैश्च, सम्पूज्य तत्र पार्वतीम् ।।३
बलिं दत्वा विधानेन, जपेदागम - चण्डिकाम् ।
यद् यदिष्ट-तमं लोके, तत्-तदाप्नोति निश्चितम् ।।४
कृष्णाष्टमी-समायुक्ता, विशाखा वा शनौ भवेत् ।
तत्र जप्ते दृशीं कृत्वा, साधकः साधयेत् शिवाम् ।।५
अपराजिता-शतकैः (पुष्पैः), सम्पूज्य परमेश्वरीम् ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां, नवम्यां वापि पार्वतीम् ।।६
पूजयित्वाऽग्र - मनसा, दुर्गा - पाठमिमं जपन् ।
लभते वाञ्छितं सर्वमिह - लोके परत्र च ।।७

 ।। श्रीरुद्रयामले साधन-रहस्यं नाम मध्यमः पटलः ।।

उत्तमः पटलः

(फल-रहस्यम्)

॥ पूर्व-पीठिका – रुद्र उवाच ॥

चण्डिकां हृदये न्यस्य, स्मरणं यः करोत्यपि ।
अनन्त-फलमाप्नोति, देवि ! चण्डी - प्रसादतः ॥१
रवि-वारे यदा चण्डीं, पठेदागम - सम्मताम् ।
नवावृत्ति - फलं तस्य, जायते नात्र संशयः ॥२
सोम - वारे यदा चण्डीं, पठेद् यस्तु समाहितः ।
सहस्रावृत्ति - पाठस्य, फलं जानीहि सु - व्रते ! ॥३
कुज - वारे जगद्धात्रि ! पठेदागम - सम्मताम् ।
शतावृत्ति - फलं तस्य, बुधे लक्ष - फलं भवेत् ॥४
गुरौ वारे महा-माये, लक्ष - युग्म - फलं ध्रुवम् ।
शुक्रे देवि ! जगद्धात्रि ! चण्डी-पाठेन शङ्करि ! ॥५
ज्ञेयं तुल्यं फलं दुर्गे ! पठेद् यदि समाहितः ।
शनि-वारे जगद्धात्रि ! कोटयावृत्ति-फलं ध्रुवम् ॥६
अतएव जगद्धात्रि ! यश्च चण्डीं समभ्यसेत् ।
स धन्यश्च कृतार्थश्च, राज - राजाधिपो भवेत् ॥७
आरोग्यं विजयं सौख्यं, वस्त्र-रत्न-प्रवालकम् ।
पठनात् श्रवणाच्चैव, जायते नात्र संशयः ॥८

धनं धान्यं प्रवालं च, राज - वस्त्र - विभूषितम् ।
चण्डी - श्रवण - मात्रेण, कुर्यात् सर्वं महेश्वरी ॥६

॥ मूल-पाठ ॥

ॐ घोर-चण्डी महा-चण्डी, चण्ड-मुण्ड-विखण्डिनी ।
चतुर्वक्त्रा महा - वीर्या, महा-देव - विभूषिता ॥१
रक्त - दन्ता वरारोहा, महिषासुर - मर्दिनी ।
तारिणी जननी दुर्गा, चण्डिका चण्ड - विक्रमा ॥२
गुह्य-काली जगद्धात्री, चण्डी च यामलोद्भवा ।
श्मशान-वासिनी देवी, घोर - चण्डी भयानका ॥३
शिवा घोरा रुद्र-चण्डी, महेशी गण - भूषिता ।
जाह्नवी परमा कृष्णा, महा - त्रिपुर - सुन्दरी ॥४
श्री-विद्या परमा विद्या, चण्डी वैरि - विमर्दिनी ।
दुर्गा दुर्ग-शिवा घोरा, चण्ड - हन्त्री प्रचण्डिका ॥५
माहेशी बगला देवी, भैरवी चण्ड - विक्रमा ।
प्रमथैर्भूषिता कृष्णा, चामुण्डा मुण्ड - मर्दिनी ॥६
रण-खण्डा चण्ड-घण्टा, रण-रामा रण - प्रिया ।
भवानी भद्र-काली च, शिवा घोरा भयानका ॥७
विष्णु-प्रिया महा - माया, नन्द-गोप-गृहोद्भवा ।
मङ्गला जननी चण्डी, महा - क्रुद्धा भयङ्करी ॥८

विमला भैरवी निद्रा, जातिर्बुद्धिः स्मृतिः क्षमा ।
तृष्णा क्षुधा तथा छाया, शक्तिर्माया मनोहरा ॥९
तस्यै देव्यै नमो या वै, सर्व - रूपेण संस्थिता ।
प्राण-प्रिया जाति-माया, निद्रा - रूपा महेश्वरी ॥१०
या देवी सर्व - भूतेषु, सर्व - रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः ॥११
महा-चण्डी शिवा घोरा, भयानका वर - प्रदा ।
काञ्चनी कमला विद्या, महा - रोग - विमर्दिनी ॥१२
गुह्य-चण्डी घोर-चण्डी, चण्डी त्रैलोक्य-दुर्लभा ।
देवानां दुर्लभा चण्डी, रुद्र - यामल - सम्मता ॥१३
अप्रकाश्या महा-देवी, प्रिया रावण - मर्दिनी ।
मत्स्य-प्रिया मांस-रता, मत्स्य-मांस-बलि-प्रिया ॥१४
मधु - मत्ता महा-नृत्या, भूत - प्रमथ - सङ्गता ।
महा-भागा महा-रामा, धान्यदा धन - रत्नदा ॥१५
वस्त्रदा मणि-राज्यादि - प्रजा - विषय - वर्धिका ।
मुक्तिदा सर्वदा चण्डी, महाऽऽपत्ति-विनाशिनी ॥१६
रुद्र - ध्येया रुद्र - रूपा, रुद्राणी रुद्र - वल्लभा ।
रुद्र-शक्ती रुद्र - रूपा, रुद्र - भूषा - समन्विता ॥१७
शिव-चण्डी महा-चण्डी, शिव-प्रेत-गणान्विता ।
भैरवी परमा विद्या, महा - विद्या च षोडशी ॥१८

सुन्दरी परमा पूज्या, महा - त्रिपुर - सुन्दरी ।
गुह्य-काली भद्र-काली, महा - काल - विमर्दिनी ॥१९
कृष्णा कृष्ण-स्वरूपा सा, जन-सम्मोह-कारिणी ।
अति-मात्रा महा-लज्जा, सर्व-मङ्गल-दायिका ॥२०
घोर - तन्द्रा भीम - रूपा, भीमा देवी मनोहरा ।
मङ्गला बगला सिद्धि - दायिनी सर्वदा शिवा ॥२१
स्मृति-रूपा कीर्ति - रूपा, बुद्धि - रूपा मनोहरा ।
विष्णु-प्रिया शक्र - पूज्या, योगीन्द्रैरपि सेविता ॥२२
भयानका महा-देवी, भव - दुःख - विनाशिनी ।
चण्डिका शक्ति-हस्ता च, कौमारी सर्व-कामदा ॥२३
वाराही च वराहास्या, इन्द्राणी शक्र- पूजिता ।
माहेश्वरी महेशास्या, महेश - गण - भूषिता ॥२४
चामुण्डा नारसिंही च, नृसिंही शत्रु - नाशिनी ।
सर्व - शत्रु - प्रशमनी, सर्वारोग्य - प्रदायिनी ॥२५

॥ फल-श्रुति ॥

इमां चण्डीं जगद्धात्रि ! ब्राह्मणस्तु सदा पठेत् ।
नान्यस्तु पाठको देवि ! पठने ब्रह्महा भवेत् ॥२६
नारदः पाठकश्चैव, कैलासे रत्न - भूषिते ।
वैकुण्ठे ब्रह्म - लोके च, देव - राज-पुरे शिवे ॥२७
यः श्रृणोति धरायां च, मुच्यते सर्व-पातकैः ।
ब्रह्म-हत्या च गो-हत्या, स्त्री-बधोद्भव-पातकम् ॥२८

तत् - सर्वं पातकं दुर्गे ! मातृ - गमन-पातकम् ।
स्वश्रू-गमन - पापं च, कन्या - गमन - पातकम् ॥२६
सुत - स्त्री - गमनं चैव, यद्-यत् पापं प्रजायते ।
पर - दारा - कृतं पापं, तत्क्षणादेव नश्यति ॥३०
जन्म-जन्मान्तरात् पापाद्, गुरु-हत्यादि-पातकात् ।
मुच्यते मुच्यते देवि ! गुरु - पत्नीषु सङ्गमात् ॥३७
मनसा वचसा पापं, यत् पापं ब्रह्म - हिंसने ।
मिथ्या-जन्यं च यत् पापं, तत् पापं नश्यति क्षणात् ॥३२
श्रवणं पठनं चैव, यः करोति धरातले ।
स धन्यश्च कृतार्थश्च, राज - राजाधिपो भवेत् ॥३३
यः करिष्यत्यवज्ञां, रुद्र - यामल - चण्डिकाम् ।
पापैरेतैः समायुक्तो, रौरवं नरकं ब्रजेत् ॥३४
अश्रद्धां ये च कुर्वन्ति, ते च पातकिनो नराः ।
रौरवं नरक - कुण्डं, कृमि - कुण्डं मलस्य वै ॥३५
शुक्रस्य कुण्डं स्त्री-कुण्डं, याति ते ह्यचिरेण वै ।
ततः पितृ-गणैः सार्द्धं, विष्ठायां जायते कृमिः ॥३६
शृणु देवि ! महा-माये ! चण्डी-पाठं शृणोत्यपि ।
गयायां चैव यत् पुण्यं, काश्यां विश्वेश्वराग्रतः ॥३७
प्रयागे मुण्डने चैव, हरिद्वारे हरेर्गृहे ।
तुल्य-पुण्यं भवेद् देवि ! सत्यं दुर्गे ! शिवे ! रमे !।३८
त्रि-गयायां त्रि-काश्यां वै, यच्च पुण्यं समुत्थितम् ।
तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं, तच्च पुण्यं न संशयः ॥३९
भवानी च भवानी च, भवानीत्युच्यते बुधैः ।
भकारश्च भकारश्च, भकारः केवलः शिवः ॥४०
वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः ।
प्रेत-वद् देवि ! विश्वेशि ! भकारः प्रेत-वत्सलः ॥४१

आरोग्यं च जयं दुःख - नाशनं सुख - वर्द्धनम् ।
धनं पुत्रं जरारोग्यं, कुष्ठं गलित - नाशनम् ॥४२
अर्द्धाङ्ग - रोगान्मुच्येत, दद्रु - रोगाच्च पार्वति !
सत्यं सत्यं जगद्धात्रि ! महा-माये ! शिवे ! शिवे !॥४३
चण्डे ! चण्डे ! महा-घोरे ! चण्डिके ! व्याधि-नाशिनि !
मन्दे दिने महेशानि ! विशेष - फल - दायिनी ॥४४
सर्व-दुःखात् प्रमुच्येत, भक्त्या चण्डीं शृणोति यः ।
ब्राह्मणो हित - कारी च, पठेन्नियत - मानसः ॥४५
मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेयं, मङ्गलं जय - मङ्गलम् ।
भवेद्धि पुत्र - पौत्रैश्च, कन्या - दासादिभिर्युतः ॥४६
तत्त्व-ज्ञानं च निधने, काले निर्वाणमाप्नुयात् ।
महा-दानोद्भवं पुण्यं, तुला - हिरण्यके यथा ॥४७
चण्डी-स्मरण - मात्रेण, पठनाद् ब्राह्मणोऽपि सः ।
निर्वाणमेति देवेशि ! महा-स्वस्त्ययनं हि तत् ॥४८
सर्वत्र विजयी जन्तुः, श्रवणाद् ग्रह - दोषतः ।
मुच्यते च जगद्धात्रि ! राज-राजाधिपो भवेत् ॥ ४९
इमां च चण्डीं पठते मनुष्यः,
श्रृणोति भक्त्या परमां तु शिवस्य ।
चण्डीं धरण्यामति-पुण्य-युक्तां,
भक्त्यावगच्छेद् वर - मन्दिरं शुभं ॥५०
यो यन्मनोरथं दुर्गे ! तनोति धरणी - तले ।
रुद्र - चण्डी - प्रसादने, किं न सिद्धयति भू-तले ॥५१
इति सत्यं महा-देवि ! सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
नैव दुःख-भयं किञ्चित्, पाठात् श्रवणाद् यतः ॥५२
गुह्यमेकं प्रवक्ष्यामि, नैव जानन्ति केचन ।
स्मृति - भ्रंशाद् वरारोहे ! त्वयैबापि न जायते ॥५३

इति सत्यं महेशानि ! सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
नैव दुःखं नैव शोकं, नैव रोग - भयं तथा ।।५४
आरोग्यं मङ्गलं नित्यं, करोति शुभ-मङ्गलम् ।
महेशानि ! वरारोहे ! ब्रवीमि सत्यमुत्तमम् ।।५५
अभक्ताय न दातव्य, मम प्राणाधिकं शुभम् ।
मम भक्ताय शान्ताय, शिव - विष्णु - प्रियाय च ।।५६
दद्यान् कदाचिद् देवेशि ! सत्यं सत्यं महेश्वरि !
अनन्त - फलमाप्नोति, शिव-चण्डी - प्रसादतः ।।५७
अश्वमेध - वाजपेय - राजसूय - शतेन वै ।
तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्व - देवताः ।।५८
दुर्गायां मृण्मयी - ज्ञानं, रुद्र-यामल - पुस्तकम् ।
मन्त्रमक्षर - संज्ञानं, करोति हि नराधमः ।।५९
अतएव महा - माये ! किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ।
लम्बोदराधिकश्चण्डी - पठनात् श्रवणाद् यतः ।।६०
तत्-त्वमसीति वाक्येन, मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम् ।
तथास्याः पठनाद् देवि ! संसृतिः स्यात् सुदुर्लभा ।।६१
सत्यं सत्यं महेशानि ! पुनः सत्यं मयोदितम् ।
कपिला-शत - दानस्य, फलं यत् प्रति - वासरम् ।।६२
तत्-फलं लभते नित्यं, रुद्र - चण्डी - प्रसादतः ।
अन्यथा नैव सम्भाव्यं सत्यं सत्यं वदामि ते ।।६३

।। आगम-सन्दर्भे श्रीमद्-रुद्र-यामले रुद्र-चण्डिकायां हर-गौरी-सम्वादे फल-रहस्यं नाम उत्तमः पटलः ।।

तुरीयः पटलः

(दुर्गा-प्रीति-वचने माहात्म्यम्)

॥ मूल-पाठ—रुद्र उवाच ॥

पुराऽऽसीद् दिवि दुर्द्धर्षः, प्रलम्बो नामतोऽसुरः ।
इन्द्रं निर्जित्य शक्रत्वं, नीतवान् निज - तेजसा ॥१

मया दत्त-वरोन्मत्तः, काल-कङ्काल-प्रोष्कलान् ।
सुकालं विकलं कौलं, मिष्कालं काल - सञ्चयम् ॥२

प्रति-कालं कार्य - कालं, हर्ष - कालं हलाहलम् ।
सङ्कालं काल-कुलकं, काल - हाढ्यं हटाहटम् ॥३

हटत्-कालं वृहत्-कालं, काल-चक्रं कलाकलम् ।
महा-कालं काल - रूपं, सैन्यैर्द्वि-कोटि-संज्ञकम् ॥४

अमारयत् सुर - प्रीत्यै, विड़ोज - प्रमुखैः स्तुता ।
दुन्दुभीर्वादयित्वा च, घण्टाद्यैर्घोर - रावणैः ॥५

विडोजास्तद्-भयात् शीघ्रं, ब्रह्माद्यैरगमत् ततः ।
कारणाख्य - जलानां वै, उपरिस्था परेश्वरी ॥६

यत्रास्ते ताभिः सखीभिर्नायिकादिभिरेव सा ।
स्तुत्वा बहु-विधैः स्तोत्रैरपृच्छन् मृदु - वाक्यतः ॥७

प्रलम्बं नाशय शुभे ! नान्यथा मृत्युमेष्यति ।
इति स्तुत्वा शिवां देवाः, कथितं मातुरग्रतः ।।८

भव्या प्राह शवे ! गच्छ, प्रलम्ब-नाशनाय च ।
आज्ञां लब्ध्वा च सा देवी, गत्वाऽमर - पुरे वरे ।।९

शतैश्च योगिनी - सैन्यैर्युयुधे प्रहर - द्वयम् ।
महिष - प्रतिमं तं च, जघान परमेश्वरी ।।१०

ततस्ताभिः स्तुता तत्र, चण्डिका विश्व-रूपिणी ।
वरारोहा भगवती, स्वाश्रमा सुखिनी शुभा ।।११

मधुपा माधवी मात्रा, मित्रा मित्रं मनस्विनी ।
मनोभवा मधून्मत्ता, महिषघ्नी सु-मन्त्रिणी ।।१२

इमां च चण्डिकां नित्यं, यः पठेत् पाठयेन्नरः ।
सर्व - तीर्थावगाहस्य, फलमाप्नोति निश्चितम् ।।१३

।। फल-श्रुति ।।

यः पठेत् प्रयतो नित्यं, रुद्र - चण्डीमिमां सुधीः ।
गात्रोत्थाने गुरोरग्रे, गुहायां गवि घूमतः ।।१४

गोष्ठे गौड़े गोकुले वा, गोविन्दाग्रे गयोपरि ।
गङ्गायां गिरिजा-यज्ञे, गिरिजा - प्रति - पूजने ।।१५

ग्रहणे गो - कोटि-दाने, यत्-यत्-तीर्थं मही-तले ।
तस्मात् कोटि - गुणं पुण्यं, जायते श्रूयते यदि ।।१६

चण्डिकां रुद्र - वक्त्रारविन्द-वाक्य-विनिर्गताम् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, सत्यमेतन्मयोदितम् ।।१७
रुद्र-चण्डी-समं पुण्यं, किञ्चिन्नास्ति क्षितेस्तले ।
नित्यं यस्तां स्तवैरेतैः, स्तूयते च समाहितः ।।१८
बाधा-जालं च तस्यां वा, समस्ताचार एव हि ।
मधु - कैटभ - नैपात्यं, महिषासुर - संहरम् ।।१९
पठन्ति पाठयन्त्येव, बधं शुम्भ - निशुम्भयोः ।
श्रोष्यन्ति नित्यं ये भक्त्या, माहात्म्यं तव चण्डिके !।।२०
नवम्यां कृष्ण - पक्षे वा, चतुर्दश्यां तथैव च ।
शुक्लाष्टम्यां पर्वतो वा, भक्ताश्चैवेक - चेतसः ।।२१
न चैषां दुष्कृतं किञ्चिन्न, दारिद्रचं न चापदः ।
न च शत्रु-भयं किञ्चित्, न चैवेष्ट - वियोजनम् ।।२२
दस्युतो न राजतो च, न शस्त्रानलयोरपि ।
न जले नोपसर्गे च, महा - मारी - भयं न च ।।२३
यत्रैतत् पठचते भक्त्या, नित्यमायतने मम ।
तत् स्थानं न विमोक्ष्यामि, सान्निध्यं मम सर्वदा ।।२४
महा-स्वस्त्ययनं पुण्यं, पाप-जाल - विनाशनम् ।
चतुर्वर्ग - प्रदं सत्यं, तथाऽक्षय - दिवः - प्रदम् ।।२५
वह्नि - कर्मणि पूजायां, बलि - दाने तथोत्सवे ।
ममैतां चण्डिकां श्रुत्वा, तत् सर्वमक्षयं लभेत् ।।२६

युद्धे वीर - वरो भूयात्, निर्भयो रिपु-संकुले ।
कल्याणं लभते नित्यं, लभते कुल - वर्द्धनम् ।।२७

शान्ति - कर्मणि दुःस्वप्ने, प्रपठेद् मित्र-कर्मणि ।
सङ्घात - भेदने चैव, रक्षो - भय - विनाशने ।।२८

आरोग्ये शत्रु - संहारेऽरण्ये याने वनाग्नितः ।
शून्ये सिंहादि - जन्तूनां, भये सर्व - भयेऽपि च ।।२९

स्मरन्नेतत् परं गुह्यं, सङ्कटान्मुच्यते नरः ।
एकधा दशधा चैव, शतधा च सहस्रधा ।।३०

अयुतं लक्षं नियुतं, कोटयर्बुद - महाऽर्बुदम् ।
पदमं चापि महा-पद्मं, खर्वं च लघु - खर्वकम् ।।३१

हंसं चैव महा - हंसं, महा - शङ्खं च धूलकम् ।
अक्षौहिणी-महा-धूलं, महा-क्षौहिणिका क्रमात् ।।३२

यथा - शक्ति यथाऽऽवृत्ति, यावज्जीवं भवार्णवे ।
तावद् वा जन्मनि दिनं, कियत्-कालं कलौ कुले ।।३३

भवानीत्युच्चरन् जन्तुर्भवान्मुच्येत नान्यथा ।
भवानीत्युच्चरन् व्याजात्, न योनौ जायते जनः ।।३४

अथानुक्रमिकां वक्ष्ये, शृणु देवि ! शुचि-स्मिते !
न्यासं विधानं पूजां च, नत्वा सर्वमुदीरयेत् ।।३५

आदौ द्वि-तूर्य-पञ्चानां, चत्वारिंशद् - द्वितीयके ।
अष्टोत्तर-शतं तिस्रोऽप्यष्टोत्तर - शत - द्वयम् ।।३६

संख्यातमेव श्लोकानां, मयोक्तं खलु पार्वति !
गृहेऽपि लिखितं तिष्ठन्नूक्तं फलमवाप्नुयात् ।।३७

।। रुद्रयामले रुद्र - चण्डिकायां तुरीय-पटले दुर्गा-
प्रीति-वचने माहात्म्यं रुद्रोक्ता रुद्र-चण्डी सम्पूर्णा ।।

क्षमा-प्रार्थना

ॐ यदक्षर-परिभ्रष्टं, मात्रा - हीनं च यद् भवेत् ।
पूर्णं भवतु तत् सर्वं, त्वत् - प्रसादान्महेश्वरि ! ।।
भ्रमणे पठितं यच्च, श्लोकं श्लोकार्द्धमेव वा ।
तन्मे सम्पूर्णतां यातु, प्रसादात् तव चण्डिके ! ।।

परिशिष्ट

१. 'श्रीरुद्र-चण्डी' का प्रस्तुत पाठ

'रुद्र-यामल तन्त्र' सम्पूर्ण रूप में उपलब्ध नहीं है। प्रकाशित रूप में 'रुद्र - यामल तन्त्र' का जो अंश प्राप्य है, उसमें प्रस्तुत 'श्रीरुद्र-चण्डी' कहीं दिखाई नहीं देती।

'हिन्दी मन्त्र - महार्णव', देवी - खण्ड के पृष्ठ ३८७ में जो 'रुद्र-चण्डी-पाठ' सङ्कलित है, उसमें न तो विनियोग, न्यास, ध्यानादि दिए हैं और न ही वह चार अध्यायों में विभाजित है। उसमें तीन अनुच्छेद हैं। पहले अनुच्छेद का शीर्षक है—'रुद्र-चण्डी-पाठ:' (उक्तं च रुद्र - यामले)। फिर 'अन्यच्च' शीर्षक के अन्तर्गत दो अनुच्छेद और हैं।

हमारे द्वारा यहाँ प्रस्तुत 'श्रीरुद्र-चण्डी' का पाठ वङ्ग प्रदेश में प्रचलित प्रारूप के अनुरूप है। इसके उत्तम पटल के 'मूल-पाठ' - सम्बन्धी अंश प्राय: 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' जैसे ही हैं।

२. वङ्ग-प्रदेश में प्रचलित 'श्रीरुद्र-चण्डी'

वङ्ग-प्रदेश में प्रचलित 'श्रीरुद्र-चण्डी' चार अवच्छेदों या पटलों में विस्तृत है। साथ ही उसके पूर्व पूजा-विधि, दो कवच-स्तोत्र और पाठ-क्रम भी दिया है। 'पाठ-क्रम' के अनुसार—"गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, शिव और चण्डिका को प्रणाम कर अङ्ग-न्यास करे। तब स्तुति का पाठ करे। इसे शिव ने कहा है, देवी ने सुना है और गणेश ने लिखा है। कर एवं अङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' आदि से करके माया (ह्रीं) या प्रणव (ॐ)

से प्राणायाम करे। वायु - बीज 'यं' आदि से भूत - शुद्धि कर देवी की आज्ञा ग्रहण कर उनका पूजन कर पाठ करे।"

'पूजा-विधि' से और भी विस्तृत उपासना - क्रम की सूचना मिलती है। यथा—१ स्वस्ति-वाचन, २ सङ्कल्प, ३ घट-स्थापन, ४ सामान्यार्घ्य से प्राणायाम तक की क्रिया, ५ ऋष्यादि-न्यास, ६ षडङ्ग-न्यास, ७ ध्यान, ८ मानस-पूजन, ९ विशेषार्घ्य-स्थापन, १० दक्षिणा - काली के समान पीठ - पूजा, ११ पुनः ध्यान कर मूल-मन्त्र (ॐ ऐं ह्लीं ॐ क्रीं ह्लीं क्लीं ह्लीं ह्लीं) से आसनादि षोडशोपचार-पूजा, १२ आवरण-पूजा, १३ पुनः देवी - पूजा कर मूल-मन्त्र से तीन बार तर्पण कर 'रुद्र - चण्डी गायत्री मन्त्र'—"ॐ ह्लीं रुद्र-चण्डिकायै विद्महे पूर्ण-फल-प्रदायिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्"—से तीन पुष्पाञ्जलियाँ देकर यथा-शक्ति मूल-मन्त्र का जप, १४ तन्त्रोक्त विधि से बलि - प्रदान, १५ प्रार्थना कर पाठ-क्रम के अनुसार 'रुद्र-चण्डी' का पाठ और १६ दक्षिणा देकर अच्छिद्रावधारण।

इस षोडशाङ्ग पूजा के पूर्व 'रुद्र-चण्डी' के शाप - विमोचन और शापोद्धार की विधि भी दी है। यथा—

३. शाप-विमोचन और शापोद्धार-विधि

'शाप-विमोचन' हेतु विनियोगादि पढ़े—

ॐ नमश्चण्डिकायै। ॐ रं क्रीं क्रीं क्रूं शं षं वं रां सां हां ह्लं ॐ ॐ। प्रजापतिः ऋषिः, ब्रह्म-विष्णु-देवते, रुद्र-चण्डी-शाप-विमोचने विनियोगः ॥१

ठं ठं ठं कं कं कं खं खं खं। प्रजापतिः ऋषिः, वायुर्देवता, प्रचण्ड-चण्डी-शाप-विमोचने विनियोगः ॥२

प्रजापतिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, रुद्रः देवता, ह्रीं सीं शूं शूं हूं फट् स्वाहा, रुद्र-चण्डी-गुह्य-शाप-विमोचने विनियोगः ।।३

प्रजापतिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, विराट् - प्रकृति - कर्माणः देवता, रुद्र-चण्डी-शाप-विमोचने विनियोगः ।।४

प्रजापतिः ऋषिः, गायत्री छन्दः सूर्यः देवता, रुद्र - चण्डी-शाप-विमोचने विनियोगः ।।५

प्रजापतिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, कामाख्या देवता, रुद्र-चण्डी-शाप-विमोचने विनियोगः ।।६

श्रीकृष्ण-शाप - परिमोचन - मन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णः देवता, श्रीकृष्ण-शाप-विमोचने विनियोगः ।।७

ॐ ह्रीं हूं हूं घोर-चण्डी महा-चण्डी साक्षाद्-ब्रह्म-स्वरूपिणी ।
दूषिता कृष्ण-शापेन, मुक्ता त्वं भव सु - व्रते !
लोकानां च हितार्थाय, शम्भुना गदिता पुरा ।
कृष्ण-शाप-विमुक्ता हि, यथोक्त - फ़लदा भव ।।

ब्रह्म - शाप - विमोचन - मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, ब्रह्मा देवता, ब्रह्म-शाप-विमोचने विनियोगः ।।८

ब्रह्मणा सेविता व्याप्ता, न सम्यक् फल - दायिनी ।
शाप-मुक्ता हि देवि ! त्वं, यथोक्त - फलदा भव ।।

ह्रौं ह्लूं ह्लूं ह्लीं श्रीं श्रीं ब्रीं ब्रूं ऐं ह्लीं क्रीं ह्लूं ग्लौं ऐं क्लीं क्रीं ह्लीं ह्लीं ह्सौं क्रीं रां स्त्रीं ह्लीं ह्लीं ऐं क्लीं मौं क्लीं ह्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ स्वाहा । रीं रामः ॐ क्लीं क्लीं हंसः फट् वौषट् स्वाहा । ॐ ॐ ॐ हौं हौं हौं ह्लौं ह्लौं ह्लौं हूं हूं हूं स्वाहा । हूं ह्लीं ह्लीं ह्लौं ॐ क्लः स्वाहा । ॐ ह्लीं हूं स्वाहा । ॐ ह्लौं नमः शिवाय स्वाहा ।। इति शापोद्धारः ।

उल्लेखनीय है कि उक्त शाप - विमोचन या शापोद्धार की विधि न तो किसी प्राप्य तन्त्र-ग्रन्थ में उपलब्ध है और न इस सम्बन्ध में किसी प्रामाणिक सूत्र का उल्लेख है। विनियोगों का स्वरूप भी सन्देहास्पद है। पूजा-विधि में नवाक्षर मूल-मन्त्र 'ॐ ऐं ह्रीं ॐ क्रीं ह्लीं क्लीं ह्रीं द्रीं' बताया है, जो सन्दिग्ध है क्योंकि मन्त्रोद्धार के अनुसार अन्त में 'ह्रीं द्रीं' के स्थान पर 'ह्रीं ह्रीं' होना चाहिए। विद्वान् साधकों द्वारा यह सारी विधि विचारणीय है।

४. निष्कर्ष—मूल-पाठ के श्लोकों का पाठ

उपर्युक्त विवरण से प्रतीत होता है कि मूल रुद्र-चण्डी-पाठ को भी 'श्रीदुर्गा सप्तशती' के समान विस्तार प्रदान किया गया है। जैसा कि 'कौल - कल्पतरु' पण्डित शुक्ल जी का मत है कि सप्तशती के तीन चरित (तेरह अध्याय) ही मुख्य हैं, केवल उन्हीं का पाठ आवश्यक है, उसी प्रकार हमारा यही विश्वास है कि प्रस्तुत 'श्रीरुद्र-चण्डी-पाठ' के चार पटलों के अन्तर्गत जो अंश 'मूल-पाठ' शीर्षक के अन्तर्गत दिए गए हैं, केवल उन्हीं का पाठ करने से पाठ-कर्ता को अभीष्ट फल की प्राप्ति हो जाएगी। पूर्व-पीठिका, फल-श्रुति का पाठ आवश्यक नहीं है। हाँ, जिन्हें समय है, वे यदि उनका भी पाठ कर लें, तो 'अधिकस्य अधिकं फलं' के अनुसार उन्हें विशेष फल मिल सकता है। यही बात पूजा-विधि के सम्बन्ध में माननीय है। 'श्रीरुद्र-चण्डी पूजा-विधि' में निर्दिष्ट बातें आवश्यक हैं, किन्तु सामान्य भक्तों के लिए तो 'मूल-पाठ' के श्लोकों का पाठ कर लेना ही पर्याप्त और फल-प्रद है।